नई दिल्ली में आयोजित स्मारक सभा के अवसर पर स्वामी रंगनाथानंद को प्रधानमंत्री की ओर से श्रद्धांजलि

दिनांक 15 मई, 2005
नई दिल्ली

इस अवसर पर उपस्थित होना मेरे लिए बड़े सौभाग्य और सम्मान की बात है कि हम अपने समय की एक महान आत्मा के जीवन और कार्यों की प्रशंसा करने के लिए एकत्र हुए हैं। स्वामी रंगनाथानंद वास्तव में एक ज्ञानी और विद्वान पुरुष थे जिन्होंने आत्म-ज्ञान की पराकाष्ठा को प्राप्त किया और ज्ञान की आत्मानुभूति करके संसार में परमानंद का प्रसार किया।

यह बड़े दुःख और गहरी क्षति की बात है कि हमारे करोड़ों देशवासियों को हमारे समय के एक महान शिक्षक स्वामी रंगनाथानंद को खोने का समाचार मिला।

स्वामीजी असाधारण रूप से एक प्रतिभाशाली व्यक्ति, महान शिक्षक, विद्वान, मनीषी, जरूरतमंदों लोगों के साथी और गहन भक्तिभाव रखने वाले पुरुष थे। वे भारतीय संस्कृति और सभ्यता की श्रेष्ठतम परम्पराओं में विश्वास रखने वाले एक सच्चे मानवतावादी थे। वे एक स्थापक भी थे जिन्होंने रामकृष्ण मिशन के लिए देश तथा विदेशों में ज्ञान और साधना के नए केन्द्रों की स्थापना की तथा निर्माण करवाया। भारतीयों की कई पीढ़ियों ने उनकी छत्रछाया में बैठकर हमारी महानतम पुस्तकों, महाकाव्यों तथा धार्मिक ग्रंथों की शिक्षाओं को ग्रहण किया है। इसमें कोई शक नहीं है कि वे भगवद्गीता के सर्वाधिक काव्यात्मक और दार्शनिक व्याख्याताओं में से एक थे। वेदान्त पर उनके व्याख्यानों ने उन्हें विश्व भर के विद्वानों से सम्मान और अपने शिष्यों से प्रशंसा दिलाई।

स्वामी जी ने सचमुच अपने जीवन का पूरा सदुपयोग किया और उन्होंने हमारे विशाल उप-महाद्वीप के प्रत्येक भाग में रहकर अपने जीवन की गहरी छाप छोड़ी। उन्होंने हमें प्रेम, त्याग, ज्ञान और धर्म-परायणता का पाठ पढ़ाया तथा विश्व भर के अपने शिष्यों को ज्ञान और शिक्षा का महत्व बताया तथा उसे दक्षिण-एशिया के सभी हिस्सों में फैलाया। रामकृष्ण मिशन के शिष्यों द्वारा उन्हें "दूसरा स्वामी विवेकानन्द " माना जाता था और यह सच भी है। हमारे प्राचीन और धार्मिक ग्रंथों पर उनकी व्याख्या आधुनिकतावाद, मानवतावाद और उदारवाद से मिश्रित थी।

स्वामी रंगनाथानंद एक महान विद्वान थे और जैसा कि मैने पहले कहा, वे एक महान शिक्षक भी थे। सर्वपल्ली राधाकृष्णन के लेखों के साथ-साथ, स्वामी जी के विद्वतापूर्ण निबंधों से इस प्राचीन भूमि के सभी महान धर्मों के सच्चे मूल्यों को लाखों युवाओं को आत्मसात् करने में मदद मिली। चाहे वे केरल में हों या कोलकाता में, हैदराबाद में हों या नई दिल्ली में, जहाँ कहीं भी स्वामी जी रहे, उन्होंने अपने पीछे ऐसे प्रबुद्ध लोगों की अनेक पीढ़ियां छोड़ी हैं जिन्होंने मानव सेवा और लोक-कल्याण के कार्यों में अपना जीवन समर्पित कर दिया है।

उनके भाषण किशोरों से लेकर वरिष्ठ नागरिकों तक सभी आयु के श्रोताओं को आकर्षित करते थे। कुछ लोग ज्ञान के लिए आते थे, कुछ प्रेरणा पाने के लिए परंतु सभी लोग उनके पास मन के चैन और शान्ति के लिए आते थे। उनकी मधुर आवाज, उनके मनमोहक व्यक्तित्व, उनकी गहन विद्वता के अलावा, उनकी मानवीय मुख-मुद्रा बड़ी तादाद में श्रोताओं को आकर्षित करती थी। वे हमारे समय के महान प्रचारक और दिव्यता के आदर्श थे। मैंने स्वयं स्वामी जी के भाषणों को सुना है। मैं उनकी आवाज और विचारों से बहुत मुग्ध हुआ। उनके भाषणों से उनमें निहित ज्ञान के विशाल भंड़ार की झलक मिलती थी। उनके चहेरे से शांति, निर्मलता और परमानन्द का भाव छलकता था। उनकी उपस्थिति में, हम अपने आपको सांसारिक चिंताओं से दूर महसूस करते थे।

स्वामी जी मुझे भगवद्‌गीता के दो स्रोतों की याद दिलाते हैं और मैं उन्हें यहां उद्धृत कर रहा हूँ :

1) "शत्रु और मित्र में एक भाव (रखने वाला) और उसी प्रकार मान और अपमान में, सर्दी में, गर्मी में, सुख में और दुःख में एक समान, आसक्ति से मुक्त, जिसे निन्दा और स्तुति एक सी हैं, जिसने मौन धारण किया है, जो, जो कुछ मिल जाए उसमें संतुष्ट है, जो एक स्थान से बंधा नहीं, जिसकी बुद्धि स्थिर है, जो भक्तिमय है, वह पुरुष मुझे प्रिय है।"

2) गीता में यह भी कहा गया है, "जो हर कहीं मुझको देखता है और सब को मुझमें देखता है, मै उसके लिए लुप्त नहीं होता और न वह मेरे लिए लुप्त होता है। सारी सृष्टि में स्थित मुझको, जो भजता है एकत्व में लीन हुआ, वह योगी कहीं भी रहते हुए, मुझमें रहता है।" स्वामी जी एक ऐसे ही योगी थे।

स्वामी रंगनाथानंद के निधन से विश्व ने हर दृष्टि से एक सच्चा सन्यासी खो दिया है। आज हम सभी ज्ञान के क्षेत्र में और गरीब हो गए हैं। मैं रामकृष्ण मिशन से आग्रह करता हूं कि वे स्वामी जी के लेखों को प्रकाशित करके और उनके भाषणों के दृश्य-श्रव्य टेप जारी करके उनकी याद को ताजा रखें ताकि भावी पीढ़ियाँ इसी प्रकार स्वामी जी के ज्ञान, अनुकम्पा और करूणा से प्रबुद्ध और समृद्ध हो सके। मैं आप सभी का सचमुच बहुत आभारी हूं कि स्वामी रंगनाथानंद को श्रद्धांजलि अर्पित करने में आपके साथ शामिल होने का मुझे मौका मिला।

....